Dr. AMAR KRISHNA
Deptt. of Economics
SRAP College, Bara Chakia

Q5 केन्द्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन करें। आप किस काम को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और क्यों?

Or,

केन्द्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया के सन्दर्भ में करें।

Discuss the main functions of a Central Bank with special reference to the Reserve Bank of India.

आधुनिक मौद्रिक एवं बैंकिंग व्यवस्था की आधारशिला केन्द्रीय बैंक है। आज संसार के हर देश में देश की बैंकिंग व्यवस्था के शीर्ष स्थान पर एक केन्द्रीय बैंक होता है। जिस पर सरकार का स्वामित्व एवं नियंत्रण होता है। केन्द्रीय बैंक का महत्व आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था में इतनी अधिक है कि Willrogers के अनुसार, सृष्टि के प्रारम्भ से तीन महान आविष्कार हुए हैं। आग, चक्र तथा केन्द्रीय बैंक। उन्हीं के शब्दों में :— "There has been three great inventions in science from the beginning time, fire, the ~~[illegible]~~ wheel and the Central Banking".

अगर यह कहा जाए कि हर देश की मौद्रिक और बैंकिंग व्यवस्था केन्द्रीय बैंक के चारों ओर चक्कर काटती हो तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

केन्द्रीय बैंक का विकास वस्तुतः वर्तमान शताब्दी में ही हुआ। इसके पूर्व भी तो कई देशों में केन्द्रीय बैंक स्थापित हो चुके थे, किन्तु उनकी धारणा स्पष्ट नहीं थी। विश्व का सबसे प्राचीन केन्द्रीय बैंक Bank of England है

जिसकी स्थापना 1694 ई० में हुई। ... बाद 1800 ई० में Bank of France, 1814 में Bank of Netherland उसके बाद अन्य देशों में भी केन्द्रीय बैंक स्थापित होने लगे। 1920 ई० में ब्रुसेल्स सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि हर देश में अनिवार्य रूप से एक केन्द्रीय बैंक होना चाहिए। इसी आलोक में 1935 ई० में भारत में Reserve Bank of India के रूप में स्थापित हुआ। जिसका राष्ट्रीयकरण 1949 ई० में हुआ। आज Reserve Bank of India संसार के अग्रणी केन्द्रीय बैंकों में है जिसमें I.M.F की सदस्यता राशि रखी जा सकती है।

केन्द्रीय बैंक को विभिन्न अर्थशास्त्री ने अपने-अपने दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। Prof. Kent के अनुसार, " केन्द्रीय बैंक एक ऐसी संस्था है जिसे सार्वजनिक हित में मुद्रा की मात्रा में विस्तार एवं संकुचन का कार्य सौंपा जाता है। जैसे-जैसे केन्द्रीय बैंक के कार्यों का विस्तार हो रहा है। इसकी परिभाषा भी बदलती जाती है। वास्तव में, केन्द्रीय बैंक की धारणा इसकी परिभाषा से नहीं बल्कि उसके कार्यों से स्पष्ट होता है।

केन्द्रीय बैंक के कार्यों का मौलिक विश्लेषण Prof. D.H. DE COCK ने अपनी पुस्तक Central Banking (Page-1) में किया है। उनके अनुसार केन्द्रीय बैंक के निम्नलिखित सात कार्य है।

1. पत्र मुद्रा जारी करने का कार्य।
2. सरकार के बैंकर एजेन्ट एवं सलाहकार के रूप में कार्य।
3. बैंको के बैंक के रूप में कार्य।
4. देश के अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा के संरक्षक एवं व्यवस्था के रूप में कार्य।
5. बैंकों के समाशोधन गृह के रूप में कार्य।
6. साख नियंत्रण का कार्य।
7. अंतिम सहायता के रूप में कार्य।

1 पत्र मुद्रा जारी करने का कार्य :→

बैंक का प्रधान कार्य देश की आवश्यकताओं केन्द्रीय
के अनुसार पत्र-मुद्रा जारी करना है। हर देश
में केवल केन्द्रीय बैंक को ही पत्र मुद्रा जारी
करने का एकाधिकार दिया गया है। भारत में
यह अधिकार Reserve Bank of India को
प्राप्त है। इसी काम के कारण पहले केन्द्रीय बैंक
को Bank of Issue कहा जाता था। सच पूछा
जाए तो केन्द्रीय बैंक का विकास ही पत्र मुद्रा जारी
करने का दायित्व किसी खास बैंक को सौंपने के
दृष्टिकोण से हुआ है।

पहले स्वर्ण मान के समय पत्र-मुद्रा
भी स्वर्ण भंडार को ध्यान में रखकर निर्गत किया
जाता था। किन्तु, अब अलग-अलग देशों में
पत्र मुद्रा जारी करने का अलग-अलग सिद्धान्त है
भारत में एक सौ पन्द्रह करोड़ रुपये का सोना
तथा 85 करोड़ रुपये का विदेशी मुद्रा का सुरक्षित
भंडार रखकर Reserve Bank of India जितना
भी चाहे पत्र मुद्रा जारी कर सकता है। सिर्फ
एक रुपये का नोट भारत सरकार का वित्त
मंत्रालय निर्गत करता है। इसलिए दो से सौ
रुपये के नोट तक Reserve Bank of India
Governor का हस्ताक्षर होता है। सिर्फ एक रुपये
के नोट पर भारत के वित्त सचिव का हस्ताक्षर
होता है। भारत में पत्र मुद्रा जिस सिद्धान्त से
निर्गत होता है Fixed Reserved System कहते
है। केन्द्रीय बैंक कितनी मात्रा में पत्र मुद्रा जारी
करेगा, यह केन्द्रीय सरकार निर्धारित करती
है। सरकार के ही निर्देशानुसार Reserve Bank
of India पत्र मुद्रा निर्गत करता है। इसका प्रधान
कार्यालय नासिक (बम्बई) में है।

2. सरकार के बैंकर एजेन्ट तथा सलाहकार
रूप में कार्य :→

Dr. AMAR KRISHNA
Deptt. of Economics
SRAP College, Bara Chakia

Q.4 माँग से आप क्या समझते हैं? माँग वक्र नीचे दाहिनी ओर क्यों झुकता है? क्या इसके अपवाद भी हैं?

Ans. अर्थशास्त्र में माँग और पूर्ति की धारणाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। अर्थशास्त्र के प्रत्येक नियम एवं सिद्धान्त में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से माँग एवं पूर्ति की शक्तियाँ काम करती हैं। माँग के विषय को इसी प्रकार से अर्थशास्त्री पेन्सन महोदय ने बड़े ही आसान ढंग से बताया है। उनका कहना है कि "यदि किसी तोते को माँग एवं पूर्ति का नियम रटा दिया जाय तो वह भी एक अच्छा अर्थशास्त्री हो जाएगा।"

Teach a parrot to say Demand and Supply in reply to every question and will be good economist.

अतः इन माँग और पूर्ति के शब्दों के अर्थों को समझ लेना जरूरी है।

माँग का जन्म इच्छा से होता है। पुनः इच्छा आवश्यकता में बदलती है तथा अन्त में आवश्यकता माँग का वह रूप ले लेती है। यह सत्य है कि माँग के लिए इच्छा का होना आवश्यक है लेकिन इच्छा मात्र नहीं कहा जा सकता। Penson के प्रभावपूर्ण इच्छा के लिए दो बातों का होना जरूरी है। इच्छा की पूर्ति के लिए साधन अथवा क्रय-शक्ति (Means of Purchase) का होना तथा उसे व्यय करने की तत्परता का होना। निःसन्देह साधन या क्रयशक्ति के अभाव में कोई भी इच्छा माँग के रूप ले सकती है। उदाहरण के लिए, यदि एक भिखारी मोटरकार की इच्छा रखता हो तो उसकी यह इच्छा माँग नहीं कहलाएगी। क्योंकि उसके पास मोटरकार खरीदने के लिए पर्याप्त साधन का अभाव है। लेकिन साधन मात्र होने से कोई इच्छा माँग में परिणत नहीं हो सकती। उसके लिए व्यय करने की तत्परता का होना जरूरी है। उदाहरण के लिए, एक धनी सेठ जिसे मोटरकार की इच्छा है। उसे खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त साधन भी है। लेकिन कंजूसी के कारण वह साधन को मोटरकार पर व्यय नहीं करना चाहता है। अतः उसकी इच्छा माँग नहीं कहलाएगी। उसकी यह इच्छा माँग के रूप में तभी परिणत होगी, जब वह मोटरकार खरीदने के लिए अपने साधन को व्यय करने के लिए तत्पर है।

माँग का नियम बतलाता है कि अधिक मूल्य पर कम माँग एवं कम मूल्य पर अधिक माँग होती है। अर्थात "Higher the price lower the demand and lower the price higher the demand."

माँग और मूल्य में विपरीत सम्बन्ध है। इसकी तुलना बच्चों के खेल see-saw से की जा सकती है।

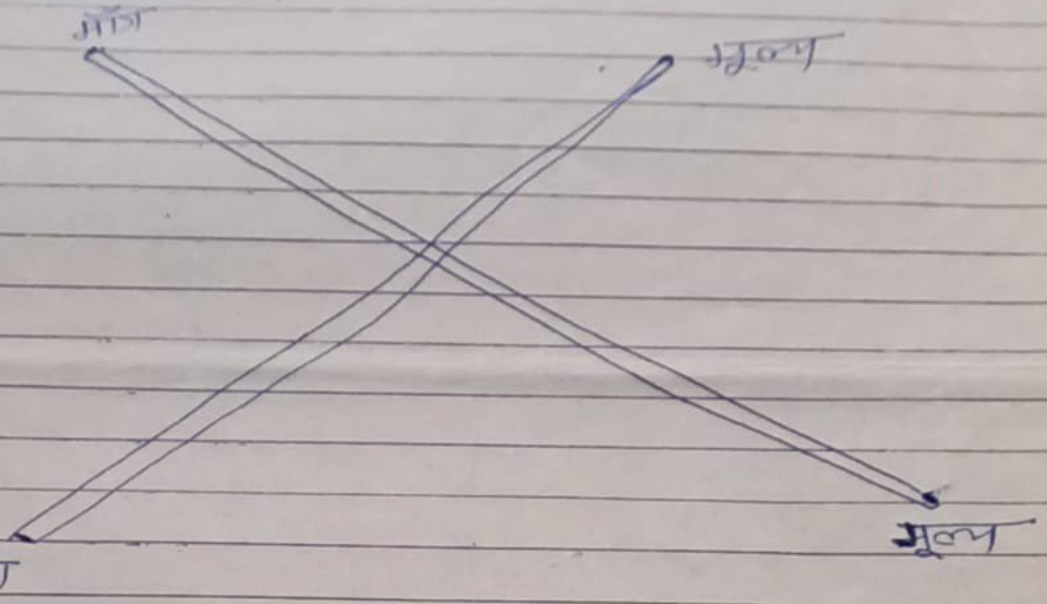

माँग नियम बतलाता है कि माँग मूल्य का फलन होता है "Dimond is the function of price."
इन दोनों में विपरीत सम्बन्ध होता है।

$$D = f(P)$$

"Function is a relation-ship between two or more varriable."
दो चरों के आपसी सम्बन्ध को फलन कहते हैं।

Demand Schedule
(माँग तालिका)

माँग और मूल में घनिष्ट सम्बन्ध है। माँग किसी दिए हुए समय में एक निश्चित मूल्य पर की जाती है। अतः किसी दिए हुए समय में भिन्न-भिन्न मूल्यों पर किसी वस्तु की माँग की जाती है।

लेकिन इच्छा प्रभावपूर्ण होने से माँग नहीं बन सकती। वास्तव में प्रभावपूर्ण इच्छा ही आवश्यकता में बदल जाती है या दूसरे शब्दों में प्रभावपूर्ण इच्छा को आवश्यकता कहते हैं। अतः प्रभावपूर्ण इच्छा या आवश्यकता को माँग में परिणत करने के लिए मूल्य का होना जरूरी है। मूल्य के बिना माँग की कल्पना नहीं की जा सकती। माँग सर्वदा एक निश्चित समय में किसी दिए हुए मूल्य पर की जाती है। अतः बेनहम ने ठीक ही कहा है कि—

"माँग का अर्थ सर्वदा एक निश्चित मूल्य पर माँग से होता है जब तक मूल्य को व्यक्त न किया जाए। माँग शब्द का कोई सार्थकता नहीं है। (Demand means always demand at price. The term was no signification unless a price is stated.

इसी प्रकार प्रो० बेनहम (Benham) ने अपनी पुस्तक Economic में कहा है कि, "किसी दिए हुए समय में किसी वस्तु की माँग उसकी वह मात्रा है जो उस मूल्य पर किसी विशेष समय में खरीदी जाएगी।

(The demand for any things at a given price is the amount of it which will be bought perunit time at that price)

इस विवेचना से हम स्पष्ट कर सकते हैं कि माँग के लिए निम्नलिखित पाँच तत्वों का होना आवश्यक है:—

(a) किसी वस्तु की इच्छा का होना (Deside)
(b) इच्छा की पूर्ति का सामर्थ्य होना (capacity)
(c) प्राप्त करने की तत्परता (willingness)
(d) निश्चित मूल्य देना (A definite price)
(e) निश्चित समय या अवधि का होना।
(A definite time and period)